09 / 210

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हाई स्कूल परीक्षा 2009

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 3 1 परीक्षा का विषय हिन्दी विशिष्ट
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 5.03.09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: G-6 सेट: A

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्राध्यक्ष

केन्द्र क्र०- 361018

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

1	9	3	5	1	9	0	0	9

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

एक	नौ	तीन						

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में — अंकों में —

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 09 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [signature]

नाम Meena Pagare पद S.A.

पता/संस्था Govt Girls H.S.S. Waidhan

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

1
2
3
4

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पु
चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन
पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक ए

हस्ताक्षर (परीक्षक) [signature] हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9620189 दिनांक 11/3/09 9620281 दिनांक.........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

प्रश्न क्रमांक - 01

(1) चरण सरोज पखारन लागा रूपक अलंकार का उदाहरण है।

(2) परंपरा बनाम आधुनिकता एक विचारात्मक निबंध है।

(3) [illegible] का नाम ज्वाला प्रसाद था।

(4) [illegible] एक महाकाव्य है।

(5) रीतिकालीन रचनाओं का प्रधान शृंगार रस है।

प्रश्न क्रमांक - 02

(i) 'वागीश' किस संधि का उदाहरण है :-

उत्तर (घ) व्यंजन संधि

(ii) 'विद्यालय' का समास विग्रह होगा :-

उत्तर (ग) विद्या का आलय

(iii) "जीवन गति है, वह नित अरुद्ध चलता है" पंक्ति पाठ्य पुस्तक के किस कविता से ली गई है :-

(ग) उद्बोधन से

घनश्याम की बहन का नाम था :-

(ग) सरस्वती

उल्लाला छन्द मे मात्राएँ होती है :-

(ख) 28

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 4 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्रमांक :- 03

सत्य

सत्य

सत्य

(iv) असत्य

सत्य

प्रश्न क्रमांक :- 04

रस को काव्य की → (ख) आत्मा कहते हैं

गोदान उपन्यास के रचयिता → (ग) प्रेमचंद

चिकित्सा विज्ञान से संबंधित → (क) सुश्रुत संहिता

एक प्रमाणित ग्रंथ

प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार → (ङ) फणीश्वरनाथ 'रेणु'

अंधे की लाठी → (घ) एकमात्र सहारा

प्रश्न क्रमांक - 05

परमात्मा से विरह-मिलन का भाव, रहस्यवाद की विशेषता है।

मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल

) सरदार सुजानसिंह

) शांत रस

(v) खण्डकाव्य

प्रश्न क्रमांक - 06

'वात्सल्य रस - सम्राट' सूरदास जी ने स्वयं को छल- कपट करने वाला, दुष्ट एवं काम - वासना पीड़ित व्यक्ति कहा है। वे स्वयं को नमक हरामी कहते हैं जो ईश्वर द्वारा सुंदर तन दिए जाने की कृपा को ही भूल गया है। द्रोह - पूर्वक जीवन यापन करना, सत्संग सुनने पर आलस्य होना, विषय - वासनाओं मे आसक्त होना, विषयी लोगों की संगति करना, नास्तिकों की गुलामी करना आदि ऐसे कर्म उन्होंने किए हैं जो उन्हे दुष्ट, पापी एवं नीच बनाते हैं। वे अपने आप को भगवान की भक्ति कर पाने मे भी असमर्थ बताते हैं। इन्ही सब कारणों से उन्होंने स्वयं को 'कुटिल -खल- कामी' कहा है।

प्रश्न क्रमांक - 07

द्विवेदी युगीन कवि रामनरेश त्रिपाठी जी एक आदर्श कवि हैं। प्रस्तुत कविता 'जीवन संदेश' मे उन्होंने स्पष्ट किया है कि इस संसार मे सभी जीव अपने कर्म मे निरत हैं। मनुष्य भी एक कर्तव्यनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने कर्तव्यों से विमुख होकर अपने जीवन के महान उद्देश्यों से विचलित नहीं होना चाहिए, बल्कि सदैव लोक कल्याण कारी कार्य करते रहना चाहिए। अपनी मातृभूमि के प्रति उसे

कुल अंक

निष्ठा - भाव रखना चाहिए तभी उसकी ~~यात्रा~~ जीवन-यात्रा सार्थक होगी। विषम परिस्थितियों में सहनशीलता एवं साहस का परिचय देना चाहिए। इस दुर्लभ मानव जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए स्वयं को कर्त्तव्यों के प्रति समर्पित कर देना चाहिए इस प्रकार कवि ने सरल - सुबोध भाषा शैली में जीवन का अमूल्य संदेश दिया है

प्रश्न क्रमांक - 08

प्रयोगवाद की विशेषताएँ :-

(i) नवीन उपमानों का प्रयोग :- इन कवियों ने प्राचीन एवं प्रचलित उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों की खोज की है। उनके मतानुसार "काव्य के पुराने उपमान अब बासी पड़ गए हैं।"

प्रेम- भावनाओं का खुला चित्रण :- प्रयोगवादी कवियों ने प्रेम- भावनाओं का अत्यंत खुला चित्रण करके उसमें अश्लीलता का समावेश कर दिया है

प्रयोगवादी कवि	रचनाएँ
अज्ञेय	हरी घास पर क्षण भर
धर्मवीर भारती	अंधायुग, कनुप्रिया

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(7)

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 7 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 09

जीवनी	आत्मकथा
(i) इसमे लेखक अन्य व्यक्ति के जीवन-चरित्र का वर्णन करता है	(i) इसमे लेखक स्वयं के जीवन-वृत्त को चित्रित करता है।
(ii) इसमे तथ्यों एवं घटनाओं का ही वर्णन होता है।	(ii) इसमे लेखक की अनुभूति की की गहराई विद्यमान होती है।
(iii) लेखक, उस व्यक्ति के उज्जवल पक्ष को ही रखने का प्रयास अधिक करता है।	(iii) लेखक इसमें स्वयं की आलोचना भी करता है।
(iv) यह प्रायः वर्णनात्मक शैली मे ही लिखी जाती है।	(iv) यह कथात्मक एवं रोचक शैली मे लिखा जाता है।
(v) जीवनी मे मृत्यु-वर्णन दिया होता है	(v) आत्मकथा मे मृत्यु-वर्णन नहीं दिया होता।

प्रश्न क्रमांक - 10

कहानी "बैल की बिक्री" में जब शिबू अपने पिता से मोहन से बैल को बेच देने के लिए कहता है, तब मोहन क्रोधित स्वर मे उससे कहता है, "चुप रह! घर मे यदि जोड़ी न होती तो इतनी बाते बनाना न आता। अरे, बैल तो किसान के हाथ-पैर होते हैं। यदि एक हाथ टूट भी जाए तो भी कोई दूसरा हाथ भी नहीं कटवा डालता। मैं इसकी जोड़ मिलन

EMP

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ के अंक कुल अंक

की फिक्र में हूँ और तू कहता है बेच दो। दूर हो जा। चला जा, जहाँ तुझे जाना हो, मैं खुद ही सेवा कर लूँगा।" इतना कहने के बाद मोहन, बैल की सेवा दुगुने उत्साह करता है ताकि गेंदीबू के अपमान की वह कसक जो अंतस्तल से मिट सके।

प्रश्न क्रमांक - 11

प्रेमचंद की कहानी 'परीक्षा' में बूढ़ा जौहरी सरदार सुजान सिंह को कहा गया है। किन्तु वे हीरे - जवाहरातों के नहीं, बल्कि मनुष्यों के जौहरी थे। जिस प्रकार एक कुशल जौहरी चमकीले कंकड़ - पत्थरों में से शुद्ध हीरे की पहचान कर लेता है, ठीक उसी प्रकार सुजानसिंह भी छिप-छिपकर उन कपटी बगुलों (अर्थात उम्मीदवारों) में से गुणवान हंस की पहचान कर रहे थे कि किसमें कर्तव्य भावना अधिक बलवती है। इस तरह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठकर उम्मीदवारों की योग्यता की परख कर रहा था।

BSEMI

पृष्ठ

प्रश्न क्रमांक - 12

अतिशयोक्ति अलंकार :- अतिशयोक्ति = अतिशय + उक्ति अर्थात अधिक उक्ति। जब काव्य मे लोक सीमा का अतिक्रमण करते हुए किसी वस्तु या विषय का खूब बढ़ - चढ़ाकर वर्णन किया जाए, तो वहाँ "अतिशयोक्ति अलंकार" होता है।

उदा० :- " पड़ी अचानक नदी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।"

यहाँ चेतक का अतिद्रुत गति से दौड़ना लोक सीमा का अतिक्रमण करता है। अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

प्रश्न क्रमांक - 13

(अ) :- शुद्ध वाक्य :-

(क) गाय का गरम दूध पिओ।

(ख) मैं आपसे मिलकर प्रसन्न हुआ।

(ग) खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।

(ब) :-

महाकाव्य व खण्डकाव्य मे अंतर :-

महाकाव्य	खण्डकाव्य
(i) इसमें संपूर्ण जीवन-वृत्त को प्रस्तुत किया जाता है।	(i) इसमें जीवन के किसी एक ही पक्ष का चित्रण होता है।
(ii) इसमें आठ या उससे अधिक सर्ग होते हैं	(ii) संपूर्ण रचना एक ही सर्ग में समाप्त हो जाती है।

प्रश्न क्रमांक - 15

लेखक परिचय :- "वासुदेव शरण अग्रवाल"

(क) दो रचनाएँ :- उरुज्योति, कल्पवृक्ष, पृथ्वीपुत्र, कला और संस्कृति आदि।

(ख) भाषा- शैली :- अग्रवाल जी की भाषा तत्सम-प्रधान शुद्ध खड़ी बोली है। सरल, सहज एवं सुबोध भाषा में आपने साहित्य-सृजन किया है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में लाक्षणिकता आ जाती है। आपके वाक्य-विन्यास समास शैली में होते हैं। स्पष्टता, प्रभावोत्पादकता, अलंकारिता आपकी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

अग्रवाल जी की शैली निम्न रूपों में दृष्टिगोचर होती है :-

(i) विचारात्मक शैली :- इस शैली का प्रयोग निबंधों में किया है जिसमें तर्क युक्ति एवं व्यवहारिकता का

पुट है।

(ii) कथात्मक शैली :- आप अपने निबंधों में पौराणिक आख्यानों का उल्लेख अवश्य करते हैं।

(iii) गवेषणात्मक शैली :- प्राचीन घटनाओं, ग्रंथों, पात्रों आदि से अनुसंधान संबंधी निबंधों में प्रयुक्त।

उद्धरण शैली :- विषय स्पष्ट करने हेतु आप संस्कृत श्लोकों, कथनों का उद्धरण भी देते हैं।

(v) सूत्रात्मक शैली :- जीवन सत्यों को उद्घाटित करते हैं समय सूत्र प्रयोग भी करते हैं।

(ग) साहित्य में स्थान :- वासुदेव शरण अग्रवाल जी श्रेष्ठ इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता हैं भारतीय संस्कृति के गंभीर अध्येता के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य निबंधकारों में आपका स्थान विशिष्ट है।

प्रश्न क्रमांक - 15

कवि परिचय :- " महादेवी वर्मा " :-

(क) दो रचनाएँ :- रश्मि, नीहार, नीरजा, सांध्यगीत, यामा दीपशिखा आदि।

(ख) भावपक्ष :-

(i) आपके काव्य में विरह एवं वेदना की विशद व्याख्या हुई। वेदना का मधुर रस समरसता का आधार

य

बनकर प्रकट होता है –

(ii) आप आँसुओं के द्वारा कण-कण मे प्रेम का संचार करना ~~चाहिए~~ चाहती हैं। उनका जीवन विरह का जलजात है।

(iii) काव्य में प्रेम एवं रहस्यमयता का भी स्वाभाविक चित्रण हुआ है। आपने प्रकृति को उद्दीपन के रुप मे अंकित किया है।

) गहन आध्यात्मिक अनुभूतियों के साथ-2 जीवन-दर्शन भी आपके काव्य मे मिलता है।

कला- पक्ष :-

(i) संस्कृतनिष्ठ शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली को अपनाया है।

(ii) काव्य मे गीत एवं मुक्तक शैली का प्रयोग किया है।

(iii) उत्साह, वियोग, करुणा, एवं त्याग कविताओं के प्रमुख रस हैं।

(iv) उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण आदि अलंकारों का सहज प्रयोग हुआ है।

(v) आपकी छन्दबद्ध रचनाओं में प्रतीकों का भी यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है।

(ग) साहित्य मे स्थान :- महादेवी वर्मा जी 'वेदना की अमर गायिका' एवं 'आधुनिक युग की मीरा' कही जाती हैं। आपका छायावादी 'कवियों' की चतुष्टयी आधार स्तंभ मे प्रमुख स्थान है।

ISEMP

पृष्ठ के अंको का योग

प्रश्न क्रमांक - 16

संकेत :- कबहुँ ससि .... मैं बिहरैं ।

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक "नवनीत" – हिन्दी विशिष्ट कक्षा 10 के " वात्सल्य - भाव " खण्ड में संकलित 'कवितावली' शीर्षक पद्य से उद्धृत हैं। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग :- इसमें कवि ने बालक राम के बाल - सुलभ स्वभाव का मनोहारी अंकन किया है।

व्याख्या :- तुलसीदास जी कहते हैं कि बालक राम चंद्रमा की सुंदरता पर मोहित होकर कभी उसकी माँग करते हुए जिद करने लगते हैं, तो कभी जल में उसी का प्रतिबिंब देखकर डर जाते हैं फिर दोनों हाथों से ताली बजाते हुए नाचने लगते हैं और अपना मनो-रंजन करते हैं। उनका यह व्यवहार माताओं को अत्यंत प्रसन्न करता है।

कविवर आगे कहते हैं कि फिर कभी बालक राम नाराज होकर हठ करने लगते हैं, जिसके लिए जिद करने लगते हैं उसे लेकर ही मानते हैं। उनकी इस मधुरता पर मुग्ध होकर तुलसीदास जी कामना करते हैं कि अवधेश (राजा दशरथ) के ये चारों पुत्र इसी तरह उनके मन रूपी मंदिर में विहार (क्रीड़ाएँ) करते रहें।

विशेष :-

(i) अवधी भाषा का प्रयोग।

ii) सवैया छंद एवं वात्सल्य रस।
iii) अनुप्रास, रूपक, पदमैत्री की छटा अवलोकनीय है।
iv) मुक्तक शैली एवं माधुर्य गुण।

प्रश्न क्रमांक - 17

संकेत :- इस पद के लिए - - - - - - - - - - नहीं है।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "नवनीत - हिन्दी विशिष्ट कक्षा 10" के 'परीक्षा' शीर्षक कहानी से अवतरित है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट "मुंशी प्रेमचन्द" जी है।

प्रसंग :- इसमें देवगढ़ रियासत के दीवान पद के लिए योग्य उम्मीदवार की अभीष्ट विशिष्टताएँ बतलाई गई हैं।

व्याख्या :- परिणाम वाले दिन सरदार सुजानसिंह उम्मीदवारों के समक्ष घोषणा करते हुए कहते हैं कि, "दीवान पद के लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो दयालु एवं साहसी हो - उसका हृदय उदार-भावना से परिपूर्ण होना चाहिए। तथा साहस का ऐसा गुण विद्यमान हो, जो अपने ऊपर आए संकट का सामना वीरतापूर्वक कर सके। दैवयोग से इस रियासत को इन विशिष्टताओं वाला पुरुष मिल चुका है। ऐसे गुणवान व्यक्ति संसार में बहुत कम होते हैं और जो हैं, वे अपने गुणों के कारण इतना

पृष्ठ के अंकों का योग

मान-सम्मान एवं ख्याति प्राप्त कर चुके हैं कि
उन तक पहुँचने की भी सामर्थ्य हममें नहीं है।

विशेष :-

(i) व्यक्ति की दृढ़ दयाशीलता एवं साहस को महत्व दिया गया है।

(ii) भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।

(iii) शैली वर्णनात्मक है।

प्रश्न क्रमांक → 18

(क) गद्यांश का शीर्षक :- " यथार्थ मनुष्य " ।

(ख) जो मानवता का आदर करना जानता है उसे ही यथार्थ मनुष्य कहा गया है।

(ग) सारांश :-

" मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है अतः एक किसी मानव के प्रति कठोर होना मानवता के प्रतिकूल है। मानवता का आदर करने वाला ही यथार्थ मनुष्य होता है। दरिद्रता या बुद्धिहीनता के आधार पर किसी मानव की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। "

प्रश्न क्रमांक :- 19

B-135, विन्ध्यनगर
सिंगरौली (म०प्र०)

प्रति,
दिनांक :- 05.03.09

श्रीमान सचिव महोदय,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल।

विषय :- ~~अं~~ हाईस्कूल परीक्षा प्रमाण-पत्र भेजने विषयक।

मान्यवर,

मेरी हाईस्कूल परीक्षा की अंकसूची कहीं खो गई है। मैंने यह परीक्षा सन् 2007 में दी थी। कृपया अंकसूची की द्वितीय प्रति भेजने का कष्ट करें। इसके लिए निर्धारित शुल्क रु० 50 का बैंक ड्राफ्ट नं० 548125 आपके नाम से भेज रहा हूँ।

मुझसे संबंधित जानकारी निम्नानुसार है :-

(1) नाम → अंगद कुमार शर्मा
(2) पिता का नाम → श्री सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा
(3) परीक्षा → हाईस्कूल परीक्षा 2007
(4) परीक्षा केन्द्र → शासकीय उ० मा० विद्यालय, बैढ़न।
(5) परीक्षा केन्द्र क्रमांक :- 35176
(6) अनुक्रमांक → 22 41 27 135
(7) नि०/ स्वा० → ~~२~~ नियमित
(8) पूरा पता → B-135, इंदिरा चौक, पो०-विंध्यनगर
सिंगरौली (म०प्र०)

(17)

या

(9) संलग्न बैंक ड्राफ्ट नं० :-

विनीत →
अंगद शर्मा

प्रश्न क्रमांक :- 20

विषय :- (iii) "वर्तमान में कम्प्यूटर की उपयोगिता"

" किसमें इतना दम, साथ जो कदम धर सके।
गति न पवन की भी, होड़ मुझसे कर सके॥"

प्रस्तावना :- वर्तमानकालीन युग वैज्ञानिक दृष्टिकोण का है, उत्कर्ष का है। यह संभवतः 'विज्ञान काल' के नाम से ही जाना जाएगा। विज्ञान के चमत्कारों की व्यापकता इतनी है कि उनसे कोई अनभिज्ञ नहीं है। इन्हीं चमत्कारों में से एक 'कम्प्यूटर' भी है, जिसे "मानव मस्तिष्क का अपर रूप" की भी संज्ञा प्राप्त है। कम्प्यूटर आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकता बन चुका है। तथा इससे कार्यप्रणाली अति तीव्र एवं सरल हो गई है।

कम्प्यूटर से आशय :- कम्प्यूटर एक यांत्रिक मस्तिष्क जो जटिल से जटिल गणितीय गणनाएँ भी अल्प समय में पूर्ण करके नेत्रों के समक्ष प्रस्तुत कर देता है

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

इसमें सूचनाओं का सम्पादन भी किया जा सकता है इसके मुख्यतः तीन भाग होते हैं :- सी॰ पी॰ यू॰; मॉनीटर एवं की-बोर्ड। सी॰ पी॰ यू॰ इसकी कार्य-प्रणाली को नियंत्रित एवं संचालित करता है।

कम्प्यूटर का इतिहास :— आज से लगभग 2000 ई॰ पूर्व जापान में एबेकस नामक लघुयंत्र का निर्माण हुई जिसके द्वारा सरल गणनाएँ की जा सकती थी। मनुष्य की उत्सुकता इस क्षेत्र में भी बढ़ी और अनुसंधान हुई। सन् 1833 में इंग्लैण्ड के एक चार्ल्स बैबेज ने कम्प्यूटर से संबंधित दो महत्वपूर्ण यंत्रों की रचना और आधुनिक कम्प्यूटर की कल्पना दी। अतः इन्हें इसका जनक भी कहा जाता है।

सन 1942 में हावर्ड आइकेन नामक अमेरिकी वैज्ञानिक ने कम्प्यूटर का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन किया। वह महान उपलब्धि का दिन था। किन्तु यह बहुत बड़ा होने के कारण सुविधाजनक नहीं था। धीरे-2 तकनीकी विकसित होती गई और आज कम्प्यूटर इतने छोटे आकार के हो चुके हैं कि इन्हें जेब में भी रखकर चला जा सकता है। भारत ने इसकी लोकप्रियता को देखते हुए सन 1965 में इसका पहली बार आयात किया।

कम्प्यूटर की उपयोगिता :— कम्प्यूटर की उपयोगिता कई क्षेत्रों में देखी जा सकती

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

है :-

(i) औद्योगिक क्षेत्र :— कारखानों एवं मशीनों के संचालन हेतु इन का खूब उपयोग हो रहा है।

(ii) सूचना क्षेत्र :- सूचना एवं समाचार प्रेषण के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रांति ला दी है। कम्प्यूटर नेटवर्कों (इन्टरनेट, ई-मेल आदि) ने संपूर्ण विश्व को एक ग्राम में बदल दिया है। सूचनाएँ आसानी प्रेषित की जा रही हैं।

(iii) बैंकिंग क्षेत्र में :— बैंकों में हिसाब-किताब रखने के लिए इनका पर्याप्त उपयोग हो रहा है यहाँ तक कि बैंक अब घरों से भी जुड़ चुके हैं।

(iv) विज्ञान क्षेत्र में :- नवीन वेधशालाओं की प्राथमिक कम्प्यूटर ही होता है। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर काफी मदद कर रहा है।

(v) डिजाइनिंग :— अब इंजीनियर भवन, उद्योगों, वाहनों, कामु-यानों आदि के डिजाइन कम्प्यूटर द्वारा आसानी से कम समय में ही बना लेते हैं।

(vi) कला के क्षेत्र में :— पेन्टर्स अपने मनपसंद चित्र इस के द्वारा प्राप्त कर रहे हैं। छायाचित्रों, चल-चित्रों, कार्टून्स आदि के निर्माण में भी इसका प्रयोग हो रहा है।

इन सबके अलावा चिकित्सा, शिक्षा, चुनाव, युद्ध, प्रकाशन, खेलकूद आदि अनेक क्षेत्रों में इसकी व्यापकता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

कम्प्यूटर के दोष :— यद्यपि कम्प्यूटर ने मानव जीवन को सुख-मय एवं आरामदायक बनाया है किन्तु

कुछ दोष भी हैं यह सैकड़ों के लोगों का काम अकेले ही कर लेता है जिससे वे लोग बेरोजगार रह जाते हैं गणनाओं में जरा सी भी त्रुटि होने पर समस्त क्रिया-कलापों पर पानी फिर जाता है और बड़ी हानियाँ भी हो सकती हैं। मानव मस्तिष्क की तरह यह संवेदनशील नहीं होता और सूझ-बूझ कर निर्णय नहीं ले पाता है।

उपसंहार :— कम्प्यूटर के एक आँगन में जहाँ बसंत केलि-क्रीड़ा कर रहा है तो दूसरी ओर मानवीय मूल्यों का भी ह्रास हो रहा है। हमें इसे अपने सेवक रूप में उपयोग करना चाहिए, न कि स्वामी की तरह। कम्प्यूटर पर जरूरत से अधिक आत्म निर्भरता मानवीय मस्तिष्क की उपेक्षा है।

भारत में अभी भी पिछड़े वर्ग की इस तक पहुँच नहीं है। अतः इसका प्रसार आवश्यक है। आशा है कि कम्प्यूटर का उचित उपयोग कर भारत शीघ्र ही विकसित राष्ट्र - श्रेणी में सम्मिलित हो जाएगा।

" जय विज्ञान, जय मानव " ।

योग पूर्व पृ०

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

23 के अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

(24) + [ ] =

पृष्ठ 24 के अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग